## लघु कथा

# मै कौन हूँ....?

– प्रो.माधुरी क्षीरसागर

".. किस जन्म का बदला ले रहे हो, क्या–क्या सपने देखे थे तेरे जनम पर ?.. मेरा बेटा एंजिनीयर बनेगा,डाक्टर बनेगा, कम से कम बाबू तो बनेगा किसी आफिस में ..। लेकिन तू सारे किए पर पानी फिराकर रहा .." बाबूजी के इन तीखे शब्दों की मुझे अब आदत सी हो गई थी। माँ की आँखों का पानी भी पिताजी के सामने बेबस था। मुझे पास लेकर मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए वह बस इतना कहती," मेरा होनहार बेटा,तू तो मेरा हीरा है, बस दुनिया की नजरों में दोष है। तू चिंता मत कर सब ठीक होगा।" यह माँ के शब्द ही मेरे जीने का सहारा थे।

मुझे याद है.. बचपन में बड़े लाड़–प्यार से माता–पिता ने पाला–पोसा। 'हमारा बेटा बड़ा होशियार है' ऐसे कहते हुए मेरे सारे गुणों को मित्र–रिश्तेदारों में सरहाया भी। लेकिन जीवन में आगे इसी गुणों पर संदेह होने लगा। जिसमें मुझे कभी 'अवरेज' तो कभी 'बिलो अवरेज' समझा जाने लगा। मेरी रुचि को बेकार बेमतलब ठहराया जाने लगा। स्कूल हो या घर–परिवार मैं तो तानों का बादशाह बन बैठा। अब तो माँ का समझाना भी खोंकला लगने लगा। मन संकुचाने लगा, अपने पराए लगने लगे, जीवन जैसे सजा लगने लगी। भविष्य में जैसे अंधेरा दिखने लगा। प्रश्नों के तूफानों में घिरने लगा। समाज में नाकाम होने के डर से निराशा की ओर बढ़ने लगा, आत्मविश्वास की मानो हत्या कर बैठा..।".... मै क्यों हूँ?.. मै कौन हूँ?.... इन प्रश्नों में उलझता गया।

जिंदगी चलती रही। माता–पिता तो नहीं रहे लेकिन उनके संस्कारोंने आत्महत्या को डरपोक लोगों का कर्म कहा और इन संस्कारों के चलते चाहकर भी उस राह को अपना न पाया.... बस अपनी पहचान बनाने की होड में नाकाम कोशिश इसी उम्मीद पर करता रहा की आज न कल मुझे पहचान मिलेगी और मुझे मेरे इस प्रश्न का उत्तर मिलेगा की .... **मै कौन हूँ ?**